आधुनिक युग में नशा का एक रूपः स्मार्टफोन
(किशोरों के संदर्भ में)

ताहिरा परवीन*

डॉ. बिनय कुमार बिमल*

सारांश :–स्मार्टफोन, जिसका आविष्कार संचार के क्षेत्र को सुविधाजनक बनाने के लिए किया गया था, आज वह एक संचार माध्यम से ज्यादा व्यक्ति की दैनिक गतिविधियों तथा मनोरंजन का सशक्त माध्यम बन चुका है, जिसके परिणामस्वरूप स्मार्टफोन का उपयोग आज समस्यात्मक स्मार्टफोन का रूप धारण कर हमारे समक्ष खड़ा है। प्रत्येक आयु वर्ग के लिए यह डिजिटल तकनीक अनिवार्य बन चुका है, किन्तु किशोरों के लिए तो यह इतना महत्त्वपूर्ण है कि उन्होंने इसे अपनी दुनिया ही बना ली है। इस लेख का लक्ष्य यह पता लगाना है कि किशोरावस्था के दौरान ही स्मार्टफोन का उपयोग समस्यात्मक क्यों हो जाता है तथा इससे बचने के लिए उपयुक्त उपाय क्या हो सकते हैं जो कारगर सिद्ध हों। साथ ही यह भी स्पष्ट करने का प्रयास है कि इन्हें किस प्रकार निर्माणात्मक पथ पर मोड़ा जाए।